NEERAJ®

New Syllabus

N-508

ikFkfed Lrj ij dyk] LokLF; vkSj 'kkjhfjd vkSj dk;Z f'k{kk dk vf/kxe

(Learning in Art, Health & Physical and Work Education at Elementary Level)

Reference Book Based on the Syllabus of

N.I.O.S.

D.El.Ed.

By : Vaishali Gupta

Published by:

NP

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6

Ph: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Price: ₹ 120.00

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Admn. Office : **Delhi-110 007**
Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website*: **www.neerajbooks.com**

	Typesetting by: ***Competent Computers***	*Printed at:* ***Novelty Printer***

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc., given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc., see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
9. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajbooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajbooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajbooks.com** *Website:* **www.neerajbooks.com**

विषय-सूची

प्राथमिक स्तर पर कला, स्वास्थ्य और शारीरिक और कार्य शिक्षा का अधिगम

(Learning in Art, Health & Physical and Work Education at Elementary Level)

Sample QUESTION PAPER - 1 (Solved) 1–4

Sample QUESTION PAPER - 2 (Solved) 1–4

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ

खण्ड-1 कला शिक्षा
(Block-1 : ART EDUCATION)

1. कला और कला शिक्षा को समझना (सैद्धांतिक) 1
Understanding Art and Art Education (Theory))

2. दृश्य कला एवं शिल्प (प्रायोगिक) 7
(Visual Arts and Crafts) (Practical))

3. प्रदर्शन कला (प्रायोगिक) 13
(Performing Art) (Practical))

4. प्रारंभिक कक्षाओं के लिए कला-शिक्षा की योजना व संगठन 19
(Planning and Organisation of Arts Education for Elementary Classes)

5. कला शिक्षा में मूल्यांकन 24
(Evaluation in Arts Education)

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ

खण्ड–2 स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा
(Block-2 : HEALTH AND PHYSICAL EDUCATION)

6.	स्वास्थ्य का अर्थ एवं अभिप्राय (Meaning and Significance of Health)	28
7.	विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के प्रमुख पहलू (Main Aspects of School Health Education Programme)	37
8.	आवश्यक 'स्वास्थ्य' सेवाएं (Essential Health Services)	45
9.	शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं अवधारणाएं (Meaning and Concept of Physical Education)	53
10.	शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम की योजना और संगठन (Planning and Organisation of Physical Education Programme)	64
11.	खेल, क्रीड़ा एवं योग (Games, Sports and Yoga)	69

खण्ड–3 कार्य और शिक्षा
(Block-3 : WORK AND EDUCATION)

12.	कार्य शिक्षा की अवधारणा (Concept of Work Education)	77
13.	कार्य शिक्षा का कार्यान्वयन (सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक पक्ष) (Implementation of Work Education) (Theoretical and Practical Aspect))	81
14.	कार्य शिक्षा में कौशलों का विकास (प्रायोगिक कार्य) (Development in Skill Work Education (Practical Work))	86
15.	विद्यालय में कार्य शिक्षा (Work Education in School and Community)	95
16.	कार्य शिक्षा में मूल्यांकन (Evaluation of Work Education)	100

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

Based on: National Institute of Open Schooling (D.El.Ed.)

प्राथमिक स्तर पर कला, स्वास्थ्य और शारीरिक और कार्य शिक्षा का अधिगम

(Learning in Art, Health & Physical and Work Education at Elementary)

समय : 3 घंटे] *[पूर्णांक : 70*

सामान्य निर्देश: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

प्रश्न. 1. किस अवस्था में बालक सचेतन रंगों का प्रयोग नहीं करता–

(क) अन्वित आरेखन अवस्था

(ख) प्राग अन्वित आरेखन अवस्था

(ग) नव यथार्थवादी अवस्था

(घ) घसीट आरेख अवस्था

उत्तर–(घ) घसीट आरेख अवस्था।

प्रश्न. 2. कुची पुड़ी नृत्य किस प्रदेश का है?

(क) केरल

(ख) आंध्र प्रदेश

(ग) महाराष्ट्र

(घ) असम

उत्तर–(ख) आंध्र प्रदेश।

प्रश्न. 3. किसी वस्तु के आरेखन को सजाने के लिए उस पर किन्हीं वस्तुओं या सामग्रियों को चिपकाकर जो कलात्मक रचना बनाई जाती है उसे क्या कहते हैं?

(क) कॉलाज

(ख) पेंटिंग

(ग) मॉडल

(घ) मुखौटा

उत्तर–(क) कॉलाज।

प्रश्न. 4. वह कौन-सी विधि होती है जिसमें बच्चों को कोई विषय दिया जाता है जिससे संबंधित जानकारी वे एकत्रित करते हैं?

(क) प्रदर्शनविधि

(ख) प्रयोगात्मक विधि

(ग) प्रोजेक्ट विधि

(घ) अवलोकन विधि

उत्तर–(ग) प्रोजेक्ट विधि।

प्रश्न. 5. हमारी पेशीय स्वस्थता के कितने घटक हैं?

(क) सात

(ख) नौ

(ग) आठ

(घ) छः

उत्तर–(ख) नौ।

प्रश्न. 6. योगासन में सांस नियंत्रण प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?

(क) धनुरासन

(ख) श्वासन

(ग) ध्यान लगाना

(घ) प्राणायाम

उत्तर–(घ) प्राणायाम।

प्रश्न. 7. बच्चे में आधारभूत संचालन योग्यताएं किस वर्ष में शुरू होती है?

(क) 8 से 10 वर्ष में

(ख) 11 वर्ष से 13 वर्ष की अवस्था तक

(ग) 2 वर्ष से 7 वर्ष की अवस्था तक

(घ) 14 वर्ष से व्यस्कावस्था तक

उत्तर–(ग) 2 वर्ष से 7 वर्ष की अवस्था तक।

प्रश्न. 8. कला शिक्षा का उद्देश्य है–

(क) बच्चे का बौद्धिक विकास करना

(ख) बच्चे का शारीरिक विकास करना

(ग) बच्चों का बहुमुखी विकास करना

(घ) ये सभी

उत्तर–(ग) बच्चों का बहुमुखी विकास करना।

प्रश्न. 9. बच्चे की प्राग अन्वित आरेखन अवस्था किस उम्र में होती है?

(क) 4 से 6 वर्ष

(ख) 6 से 8 वर्ष

(ग) 8 से 10 वर्ष

(घ) 10 से 12 वर्ष

उत्तर–(क) 4 से 6 वर्ष

प्रश्न. 10. मिले सुर मेरा तुम्हारा......''गाना, कौन-सा संगीत है?

(क) भक्ति संगीत

(ख) देशभक्ति संगीत

(ग) एकता संगीत

(घ) लोक संगीत

उत्तर–(ग) एकता संगीत।

प्रश्न. 11. एक कला शिक्षक में किस प्रकार का गुण होना चाहिए?

(क) सहानुभूतिपूर्ण

(ख) प्रोत्साहक

(ग) उदार

(घ) ये सभी

उत्तर–(घ) ये सभी।

प्रश्न. 12. प्रदर्शन पट्ट पर किन वस्तुओं का प्रयोग वर्जित है?

(क) पुश-पिन

(ख) ड्राईंग पिन

(ग) स्टेपल

(घ) चिपकाने वाली टेप

उत्तर–(ख) ड्राईंग पिन (घ) चिपकाने वाली टेप।

प्रश्न. 13. ''निर्बल व्यक्ति जो शरीर या मन से कमजोर हो, कभी भी बलवान आत्मा नहीं प्राप्त कर सकता'' ये लाईन किस महापुरुष की है?

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) गांधी जी

(ग) रविन्द्रनाथ टैगोर

(घ) जवाहरलाल नेहरू

उत्तर–(क) स्वामी विवेकानंद।

प्रश्न. 14. आंखों में सूजन, पानी आना और आंखों का लाल होना किस बीमारी का संकेत है?

(क) अंधापन

(ख) कंजक्टीवाइटिस

(ग) रतौंधी

(घ) स्कैबीज

उत्तर–(ख) कंजक्टीवाइटिस।

प्रश्न. 15. तंत्रिका तंत्र के क्या कार्य हैं?

(क) पर्यावरण से भिन्न संकेतों व उद्दीपनों को प्राप्त करना

(ख) उद्दीपनों से प्राप्त सूचनाओं को मस्तिष्क में संचयन करना

(ग) रक्त को पंप करके शरीर के सभी भागों को आपूर्ति करना

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर–(क) तथा (ख)।

प्रश्न 16. कला के महत्त्व के बारे में टिप्पणी लिखें।

उत्तर–**संदर्भ**–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 4

Sample Preview
of
The Chapter

Published by:

NEERAJ
PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

प्राथमिक स्तर पर कला, स्वास्थ्य और शारीरिक और कार्य शिक्षा का अधिगम
(Learning in Art, Health & Physical and Work Education at Elementary Level)

खण्ड-1 कला शिक्षा
BLOCK-1 (ART EDUCATION)

कला और कला शिक्षा को समझना (सैद्धांतिक)
(Understanding Art and Art Education (Theory))

1

अध्याय का विहंगावलोकन

साधारणतया कला से अर्थ विभिन्न प्रकार के कौशलों के प्रदर्शन से लिया जाता है, परन्तु यह कला की संकीर्ण विचारधारा है। व्यापक अर्थों में यदि देखें तो विभिन्न प्रकार की सामग्रियों, माध्यमों तथा तकनीकों द्वारा मुक्त रूप से अपने विचारों, संवेगों तथा भावनाओं की कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता के साथ आत्माभिव्यक्ति का साधन कला है। कला से व्यक्ति में चेतना पैदा होती है तथा उसमें सौंदर्य बोध एवं सौंदर्य सराहना की भावना भी जन्म लेती है। कला बालकों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभाएँ एवं कुशलताएँ विकसित करने में सहायता प्रदान करती है तथा उन वस्तुओं से प्रेम करना सिखाती है, जो शिव और सुंदर है। कला बच्चों में अव्यवस्थित कार्यों तथा व्यर्थ विचारों के प्रति घृणा उत्पन्न करती है। व्यक्ति के थके होने की स्थिति में कला तनाव मिटाकर विश्रांति भी देती है।

अपने पर्यावरण के प्रति बालक की सहज प्रतिक्रिया ही कला है। वस्तुत: कला के विविध रूप अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषण के विभिन्न साधनों को खोजने में बालक की सहायता करते हैं। वे उसे स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। कला शिक्षा में दो मुख्य क्षेत्र समाहित हैं-दृश्य कलाएँ एवं मंचीय कलाएँ। दृश्य कलाओं में विचारों एवं संवेगों को माध्यम तथा सामग्री आदि के द्वारा व्यक्त किया जाता है। मंचीय कलाओं में विचारों व संवेगों की अभिव्यक्ति हाव-भाव, भंगिमा, संचलन, क्रियाओं आदि द्वारा होती है। रेखांकन एवं चित्रांकन, छपाई कला, कॉलाज, मृत्तिका प्रतिरूपण एवं मॉडल बनाना प्रमुख दृश्य कलाएँ हैं तथा संगीत, नृत्य, नाट्य, कठपुतली खेल आदि मंचीय कलाएँ हैं।

बालकों द्वारा अपनी आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त सभी विधाएँ बाल-कला कहलाती हैं। सार्वदेशिकता तथा समुचित मार्गदर्शन एवं प्रकृति, पर्यावरण तथा विविध प्रकार की सामग्री के संपर्क से कला की गुणवत्ता बढ़ना कलात्मक अभिव्यक्ति के प्रमुख लक्षण हैं।

बच्चों की कला में विकास की पहचानी जा सकने वाली अवस्थाओं में आयु तथा वैयक्तिक भिन्नताओं के आधार पर विविधता दिखाई देती है। घसीट आरेखन व्यवस्था, प्राग अन्वित आरेखन अवस्था, अन्वित आरेखन अवस्था, नव्य यथार्थवादी अवस्था एवं यथार्थवादी अवस्था बाल-कला के विकास की विभिन्न अवस्थाएँ हैं। आरेखन बालक के जीवन में बहुत ही जल्दी लगभग 2 वर्ष की आयु में आरंभ हो जाता है। इस अवस्था में बच्चा कागज पर इधर-उधर निशान मारता है। 4 से 6 वर्ष की आयु में प्राग अन्वित आरेखन अवस्था प्रारंभ होती है। बच्चे द्वारा पहली बार किए गए सादृश्यमूलक प्रयासों को अनुसंधानकर्त्ताओं ने प्राग अन्वित आरेखन अवस्था कहा है। बच्चे को 6 से 9 वर्ष का होने पर अन्वित आरेखन अवस्था आरंभ होती है, जो बालक के कलात्मक विकास का दूसरा स्तर है। इस अवस्था में बालक एक सुनिश्चित 'रूप' संकल्पना विकसित करता है एवं अपने आरेखन में वह या तो स्वयं सृजित अथवा कहीं और देखे गए मानक प्रतीकों द्वारा मितव्ययता लाता है। 9 से 11 वर्ष की आयु तक नव्य यथार्थवादी अवस्था का विकास चरण होता है। इस आयु में बच्चों में समसमूह प्रतिष्ठा का भारी महत्त्व होता है। उनमें अपने स्व का बोध बढ़ जाता है। नव्य यथार्थवादी अवस्था के पश्चात यथार्थवादी अवस्था आरंभ होती है। इस अवस्था में बच्चा अपने आस-पास के प्राकृतिक परिवेश के प्रति क्रमश: अधिकाधिक सचेत होने लगता है तथा अपने आरेखन में अनुपात व गहराई जैसी बातों के विषय में सोचने लगता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित में से उन वस्तुओं पर (✓) का निशान लगाइएँ, जिनसे प्रतिकृतियाँ (मॉडल) बनाई जा सकती हैं–

1. मिट्टी, 2. रंग, 3. कागज, 4. प्लास्टिक, 5. तार, 6. ब्रुश, 7. टीन, 8. बक्स, 9. तबला, 10. पानी।

उत्तर–ऊपर दी गई वस्तुओं में से मिट्टी, प्लास्टिक, कागज, तार व टीन से प्रतिकृतियाँ बनाई जा सकती हैं, क्योंकि इनका प्रयोग अनेक प्रकार से मॉडल बनाने में किया जा सकता है तथा ये मॉडल के आधार का काम करते हैं। रंग, ब्रुश, पानी आदि मॉडलों की सहायक वस्तुओं के रूप में कार्य कर सकते हैं।

प्रश्न 2. विभिन्न मंचीय कलाओं के नाम लिखिए।

उत्तर–मंचीय कलाओं से तात्पर्य है वे कलाएँ जिनका मंचन किया जा सकता हो अर्थात जो मंच पर प्रदर्शित किए जाने योग्य हों।

संगीत, नृत्य, गीत, नाटक आदि कलाओं का मंचन किया जा सकता है।

प्रश्न 3. कला का क्या अर्थ है?

उत्तर–कला का अर्थ है वह कौशल जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपनी किसी कार्य के प्रति कुशलता, क्षमता व योग्यता का प्रदर्शन करता है। जैसे–संगीत, चित्रकारी आदि कलाएँ हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति न तो संगीत का गायन कर सकता है और न प्रत्येक व्यक्ति अच्छा चित्रकार हो सकता है। कला नैसर्गिक भी होती है और अभ्यास द्वारा भी कला को निखारा जा सकता है। साधारण शब्दों में कहें तो कला आत्माभिव्यक्ति का साधन है। यह किसी भी व्यक्ति की अपनी सौंदर्य भावना एवं सृजनात्मक संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति के लिए सर्वाधिक संतोषप्रद माध्यम प्रदान करती है।

कलात्मक अभिव्यक्ति के कुछ विशिष्ट अभिलक्षण होते हैं, जो निम्न प्रकार हैं–

1. बच्चो में कलात्मक अभिव्यक्ति की प्रकृति सार्वदेशिक होती है। एक ही आयु वर्ग के सभी बच्चों द्वारा चित्रांकन व रेखांकन के माध्यम से जो चित्रण किया जाता है उनमें बहुत समानताएँ पायी जाती हैं।
2. बच्चों में कलात्मक अभिव्यक्ति की गुणवत्ता समुचित मार्गदर्शन तथा प्रकृति, पर्यावरण और विविध प्रकार की कलात्मक सामग्री से हुए संपर्क की मात्रा के अनुसार बढ़ती जाती है।

अनेक अनुसंधानों से भी बच्चों में कलात्मक विकास की विभिन्न अवस्थाओं का पता चला है।

प्रश्न 4. "विद्यालयों में दिमागी थकान पैदा करने वाले विषयों के बाद कला का शिक्षण होना चाहिए।" यह कथन सही है या गलत?

उत्तर–यह सत्य है कि गणित, अंग्रेजी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान आदि विषयों का अध्ययन दिमाग को थका देता है, जिससे विषय के प्रति कुछ समय के लिए अरुचि उत्पन्न हो जाती है तथा दिमाग को आराम की आवश्यकता होती है। कला का शिक्षण मनोरंजक व रुचिकर होने के कारण दिमाग को आराम देता है, क्योंकि व्यक्ति जिस कार्य को रुचि से करता है वह कार्य उसे अत्यधिक आनंद देता है। इसलिए दिमागी थकान पैदा करने वाले विषयों के बाद बालकों को कला शिक्षण कराना चाहिए, जिससे मनोरंजन के साथ-साथ उन्हें मानसिक रूप से आराम भी मिले तथा पढ़ाई के प्रति उनकी रुचि भी बनी रहे।

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. .... अवस्था में बालक सचेतन रंगों का प्रयोग नहीं करता।
2. .... अवस्था में बालक कला का प्रयोग संप्रेषण के एक स्थान के रूप में करने लगता है।
3. अन्वित आरेखन अवस्था में बालक .... और .... के बीच संबंधों को खोजता है।
4. ....छः से नौ वर्ष की आयु के बीच होती है।
5. .... को टोली या दल अवस्था भी कहते हैं।
6. बालक कला का प्रयोग .... के साधन के रूप में करने लगता है।

उत्तर–1. घसीट आरेख, 2. प्राग अन्वित आरेखन अवस्था, 3. रंग पदार्थ, 4. अन्वित आरेखन अवस्था, 5. नव्य यथार्थवादी अवस्था, 6. संप्रेषण।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न. 1. कला शिक्षा की संकल्पना को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कला वह साधन है, जो विभिन्न सामग्रियों, माध्यमों के द्वारा स्वतंत्र रूप से अपने विचारों, संवेगों तथा भावनाओं की कल्पनाशील तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति संभव बनाता है। कला व्यक्ति को चेतन बनाती है तथा उसके अंदर सौंदर्य बोध तथा सौंदर्य सराहना की भावना विकसित करती है। इसके द्वारा बच्चों में देखने, सुनने, स्पर्श करने, अनुभव करने, संचलन एवं खोज द्वारा प्रेक्षण की कुशलता का विकास होता है। कला शिक्षा का एक मुख्य पहलू यह है कि यह एकाधिक रूपों में विभिन्न प्रकार की सामग्रियों तथा माध्यमों से संपर्क द्वारा बच्चे को अपनी पंसद के माध्यम अथवा विधा को पहचानने तथा चयन करने का अवसर देती है। बालक को उसकी सर्जनात्मक प्रतिभाओं तथा कुशलताओं

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

के विकास में कला ही सहायता करती है तथा दूसरों के लिए हितकारी तथा सुंदर दिखने वाली चीजों से प्रेम करना भी सिखाती है तथा विचारों के प्रति घृणा उत्पन्न करती हैं, जो अत्यवस्थित हैं। उनमें सुव्यवस्थित तरीके से कार्य करने तथा सुरुचिपूर्ण चिंतन की आदत विकसित होती है।

NCERT में कला शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि "कला शिक्षा का उद्देश्य शिक्षार्थियों को संवेदनशील बनाना है, ताकि वे प्रकृति में प्राप्त ध्वनियों, गतियों, रूपों, रंगो एवं रेखाओं के सौंदर्य की सराहना करना सीख सकें। कला तथा सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन से उनमें एक-दूसरे के समझने और सराहने की क्षमता विकसित हो सकती है।"

कला वह साधन है, जिससे बालक की पारंपरिक कलाएं, हस्तशिल्प, लोकगीत तथा नृत्य जैसी सांस्कृतिक विरासत अभिव्यक्त होती है। कला द्वारा ही बच्चे विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का बनाना, गढ़ना, चित्रांकन तथा आरेखन कर अपने घर को सजाते हैं। दिनभर के काम से थक जाने पर कला ही व्यक्ति को शांति देती है और उसकी थकान मिटाती है।

प्रश्न 2. अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं? विभिन्न कला विधाओं में अभिव्यक्ति किस प्रकार सहायक है?

उत्तर–किसी विचार, भाव कला, विधा आदि को किस प्रकार प्रकट किया जाता है वह अभिव्यक्ति है। कला के विविध रूप अभिव्यक्ति या संप्रेषण के विभिन्न साधनों को खोजने में बालक की सहायता करते हैं। वे उसे अपनी तरह से अपने आप को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। अभिव्यक्ति के ये सभी क्षेत्र शिक्षार्थी को कला के सर्जक, उत्पादक, निष्पादनकर्त्ता, श्रोता, समालोचक तथा मूल्यांकनकर्त्ता के रूप में तैयार करते हैं। कला शिक्षा में दो मुख्य क्षेत्र हैं–दृश्य कलाएँ तथा मंचीय कलाएँ। ये दोनों कलाएँ प्रकृति में एक-दूसरे से भिन्न हैं। दृश्य कलाओं में विचार तथा संवेग माध्यम एवं सामग्री द्वारा अभिव्यक्ति होते हैं। मंचीय कलाओं में विचार तथा संवेग हाव-भाव, भंगिमा, संचलन, एवं क्रियाओं द्वारा अभिव्यक्ति होते हैं।

रेखांकन तथा चित्रांकन, छपाई कला, कॉलाज, मृत्तिका प्रतिरूपण, मुखौटा निर्माण कला तथा मॉडल बनाना मुख्य दृश्य कलाएँ हैं तथा संगीत, लयात्मक संचलन व नृत्य, सृजनात्मक नाट्य, कठपुतली के खेल आदि प्रमुख मंचीय कलाएँ हैं।

प्रश्न 3. बाल-कला की विकासात्मक अवस्थाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर–बालकों की कला के विकास की पहचान करवाने वाली अवस्थाएँ अनेक हैं, क्योंकि इनमें बालकों की आयु तथा वैयक्तिक भिन्नताओं के आधार पर व्यापक विविधता है। इन अवस्थाओं से पार करते हुए बालक की प्रगति क्रमिक होती है तथा उनमें इस क्रमकिता के अतिरिक्त कोई अन्य सुनिश्चित प्रतिमान नहीं होता। बाल-कला की विकासात्मक अवस्थाएँ निम्नलिखित हैं–

1. **घसीट आरेखन अवस्था**–यह अवस्था बालक के कला विकास की आरंभिक अवस्था है तथा यह अवस्था बालक में 2 वर्ष की आयु में ही शुरू हो जाती है। बच्चे द्वारा कागज पर इधर-उधर निशान मारना आरेखन कहलाता है तथा इसे लिखाई के लिए हाथों के नियंत्रण का प्रारंभ भी कहा जा सकता है। शुरुआती दौर में बालक द्वारा बनाए गए निशान अर्थहीन होते हैं। बालक केवल स्वत: सुखाय रंगों का प्रयोग करता है।

घसीट आरेखन में बालक के कंधों की पेशियों का बल लगता है तथा यह इसकी अतिरिक्त शक्ति या ऊर्जा का द्योतक है। धीरे-धीरे इन संचलनों में लय आने लगती है, जिसके कारण वे कभी-सीधी, कभी गोल या कभी टेढ़ी-मेढ़ी आकृति बनाते हैं। घसीट आरेखन की तीसरी अवस्था में विभिन्न आरेखनों में रंगों का प्रयोग कर उन्हें अर्थ देने का प्रयास किया जाता है। घसीट आरेखन में बालक को आकृति के अभिकल्प का कोई स्पष्ट बोध नहीं होता।

वह इसके माध्यम से केवल अपने संवेगात्मक अंत:प्रेरण को व्यक्त करता है। अंत:प्रेरण सीमित होने पर आरेखन का क्षेत्र छोटा होता है जबकि अंत:प्रेरण के अधिक प्रबल होने पर वह बड़े क्षेत्र में आरेखन करता है।

2. **प्राग अन्वित आरेखन अवस्था**–यह अवस्था 4 से 6 वर्ष की आयु में होती है। बालक जब पहली बार सादृश्यमूलक प्रयास करता है तो इसे प्राग अन्वित आरेखन अवस्था कहा जाता है। इस अवस्था में छोटा बच्चा कला को संप्रेषण के माध्यम के रूप में प्रयोग करता है। इस अवस्था में बच्चों में स्वत: प्रवर्तित विचार स्फुटित होते हैं। ये विचार बालक के अंत:करण से उत्पन्न उसके अनुभवों, संवेगों अथवा उसकी कल्पना का अंश या संश्लेषण होते हैं अथवा बच्चे द्वारा प्रयुक्त माध्यम तथा कौशल के आंशिक रूप से प्रभावित होते हैं। इस अवस्था में माध्यम और विचारों का समाकलन होता है तथा अंत:प्रज्ञात्मक शक्ति का काफी प्रदर्शन होता है। 4 वर्ष की अवस्था में बच्चे आरेखन पहचानने लगते हैं। इस अवस्था के विकास में घसीट आरेखन भी सहायता करता है, क्योंकि अनियमित तथा टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं का आरेखन नियमित आरेखन की ओर गतिशील करता है।

3. **अन्वित आरेखन अवस्था**–यह अवस्था बालक 6 से 9

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वर्ष की आयु में प्राप्त करता है। यह बालक के कलात्मक विकास की दूसरी अवस्था है। इस स्तर पर बच्चा एक सुनिश्चित 'रूप' संकल्पना का विकास करता है और अपने आरेखन में वह स्वयं सृजित अथवा कहीं देखे गए मानक प्रतीकों द्वारा मितव्ययता लाता है। उसका आरेखन परिवेश के साथ उसके अनुभवों का प्रतीक होता है। इस अवस्था में बालक में मनुष्य की आकृति की संकल्पना अपने सक्रिय ज्ञान तथा व्यक्तित्व के आधार पर सुनिश्चित हो जाती है। इसी अवस्था में बालक में स्थान की संकल्पना का भी विकास होता है। वह स्वयं को सृष्टि के अंश के रूप में देखता है तथा अपने परिवेश व अन्य लोगों के साथ खुद को जोड़ता है। अन्वित आरेखन की अवस्था में बालक वस्तु तथा रंग के बीच संबंध खोजने में सक्षम हो जाता है। उसकी रंग योजना में होने वाले विचलन उसका संवेगात्मक अनुभव दर्शाते हैं।

4. **नव्य यथार्थवादी अवस्था**–बालक के कलात्मक विकास में 9 से 11 वर्ष तक की आयु में नव्य यथार्थवादी अवस्था आती है। मनोवैज्ञानिकों में इस अवस्था को टोली अथवा दल अवस्था नाम दिया है, क्योंकि इस आयु में बच्चे समसमूह प्रतिष्ठा को बहुत महत्त्व देते हैं। उनमें होने वाले शारीरिक परिवर्तन उनके आरेखनों में झलकते हैं तथा उनमें अपने स्व का बोध बढ़ जाता है। इस अवस्था में जैविक विकास के कारण सांवेगिक द्वंद्व उत्पन्न होने से बालक की स्वत: स्फूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। प्रतिरूपात्मक चित्रण में यथार्थवादी होते जाने के साथ-साथ उसकी प्रयोग करने की योग्यता, जोखिम उठाने के प्रति तत्परता तथा उसकी स्वत: स्फूर्ति व कला के माध्यम के प्रयोग में वह आनंद की कम अनुभूति करने लगता है। मानवीय आकृतियों के चित्रण में वह अब कपड़ों पर ध्यान देता है तथा लड़की-लड़कों के बीच अंतर पर बल देने लगता है।

इस अवस्था में रंगों के प्रति सांवेगिक आगम रंगों के वस्तुनिष्ठ प्रयोग का स्थान ले लेता है। बालक इस स्तर पर रंगों का प्रयोग कर अपने वैयक्तिक अनुभव प्रतिबिंबित करने के लिए करता है तथा इसी अवस्था में वह पहली बार डिजाइन बनाने का सचेतन प्रयास करता है। इसी अवस्था में वह आरेखन सामग्री तथा उनके प्रकार्यों से परिचित हो जाता है।

5. **यथार्थवादी अवस्था**–यह वह अवस्था है, जिसमें बालक अपने आस-पास के प्राकृतिक परिवेश के प्रति अधिक सचेत होने लगता है तथा अपने आरेखन में अनुपात तथा गहराई जैसी बातों के विषय में सोचने लगता है। इस अवस्था में बालक मानवीय आकृतियों के आरेखन में शरीर के संधि स्थलों का सहज प्रयोग कर शारीरिक क्रियाओं का चित्रण भली प्रकार कर प्रेक्षण का परिचय देता है। इस अवस्था में बालकों में त्रिआयामी अभिव्यक्ति के प्रति अंत:प्रेरण होता है। दूर की वस्तुओं को अब छोटे आकार में चित्रित करने लगता है।

प्रश्न 4. कला के महत्त्व के बारे में टिप्पणी लिखें।

उत्तर–कला का शिक्षण के क्षेत्र में विशेष महत्त्व है–

(i) **आवश्यकता पर आधारित**–कला शिक्षा की विशेषता यह है कि व्यक्ति को उसकी आवश्यकता एवं उसके गुणों के अनुसार संरचित किया जा सकता है। जैसे–उन्हें परिवार, क्रोध, पहचान, मित्रता आदि विशिष्ट विषयों के अनुसार निर्धारित कर सकते हैं।

(ii) **बालकों हेतु मित्रवत/बाल मैत्री पूर्ण**–कक्षा शिक्षा बच्चों को उनके विचार उनकी भावनाएं और उनके अनुभवों को मैत्रीपूर्ण रोचक तरीके से अभिव्यक्त करने में मदद करता है जो अधिक रुचिपूर्ण है।

(iii) **कला शिक्षा शब्दों की सीमा से परे है**–अल्पभाषा, सीमित शब्दावली, वाणी दोष युक्त बच्चों के लिए कलात्मक निर्माण अशाब्दिक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।

(iv) **संपूर्ण शरीर के माध्यम से अधिगम**–कला शिक्षा के माध्यम से बच्चे अपने एवं अन्य व्यक्तियों के बारे में, विभिन्न अन्य विषयों के बारे में संपूर्ण शरीर की विभिन्न क्रियाओं के द्वारा सीखते हैं।

(v) **आत्म-विश्वास का निर्माण/उत्थान**–बहुत सारे कलात्मक निर्माण के अभ्यास जो कि किसी अन्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बनाए जाते हैं। वे बच्चों में स्वर, शरीर एवं रचनात्मकता के प्रयोग से आत्म-विश्वास को बढ़ाते हैं।

(vi) **समस्या समाधान में सहायक एवं परिवर्तन के लिए पूर्वाभ्यास**–कला शिक्षा बच्चों को समस्याओं के वैकल्पिक हल खोजने और उसकी वजह से जीवन में आने वाले परिवर्तन के लिए पूर्वाभ्यास का काम भी करता है। जैसे– एक छात्र जो कक्षा में अत्याधिक समस्याओं का सामना करता है। उससे सुपर हीरों की तस्वीर जो सबकी समस्या का समाधान तुरंत कर देता है का चित्र बनवाया जा सकता है जो सबकी रक्षा करता है और सबकी प्रशंसा का पात्र बनता है।

(vii) **सौंदर्य बोध में वृद्धि**–दृश्य कलात्मक निर्माण एवं उन्हें देखना व उनका विश्लेषण करना दोनों ही क्रियाएं बच्चों में आलोचनात्मक चिंतन एवं उनके

www.neerajbooks.com